अध्याय 2 — शक्तियों की कीमत

एक विचित्र संसार।

आकाश में केवल पक्षी ही नहीं, मनुष्य भी उड़ रहे थे। सड़कों पर चलते हुए कुछ लोग अचानक हवा में उठ जाते, तो कुछ लोग इतनी तीव्र गति से दौड़ते कि सामान्य आँखों से उन्हें देख पाना भी कठिन था।

एक छोटा बच्चा अपने पिता का हाथ पकड़कर आकाश में उड़ते हुए एक व्यक्ति को देख रहा था।

“पिताजी, क्या मैं भी ऐसे उड़ सकता हूँ?”

पिता ने उसकी ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा—

“हाँ बेटा, उड़ तो सकते हो।”

“तो मुझे भी उड़ना सिखाइए न!”

पिता कुछ क्षण शांत रहे।

“उसके लिए बहुत सारे पैसे चाहिए, बेटा।”

बच्चे ने आश्चर्य से पूछा—

“उड़ने के लिए भी पैसे?”

पिता ने उसका हाथ पकड़ा और आगे बढ़ गए। उनके पास अपने बच्चे के इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं था।

सड़क की दूसरी ओर एक विशाल डिजिटल विज्ञापन चमक रहा था।

अपनी पसंद की शक्ति चुनिए!

अपनी क्षमताओं को बढ़ाइए!

स्वयं को दूसरों से अधिक शक्तिशाली बनाइए!

उस विज्ञापन के नीचे एक भव्य दुकान थी।

दुकान में एक धनवान व्यक्ति अपने बेटे के साथ खड़ा था।

“पापा, मुझे अग्नि की शक्ति चाहिए।”

“लेकिन पिछले महीने ही तो तुम्हें उड़ने की शक्ति दिलाई थी।”

“मेरे मित्र के पास तीन शक्तियाँ हैं और मेरे पास केवल एक!”

पिता ने बिना अधिक विचार किए दुकानदार की ओर देखा।

“इसे अग्नि की शक्ति भी दे दीजिए।”

बच्चे के चेहरे पर प्रसन्नता छा गई।

इस संसार में धन केवल सुख-सुविधाओं का साधन नहीं रह गया था। धन अब मनुष्य की शारीरिक क्षमताएँ भी निर्धारित करने लगा था।

समाज के अत्यंत धनवान लोगों को A-Class कहा जाता था।

इन लोगों को अपनी सुरक्षा के लिए अंगरक्षकों की भी आवश्यकता नहीं थी। ये स्वयं किसी साधारण मनुष्य से कई गुना अधिक शक्तिशाली थे।

परंतु इन शक्तियों की एक सीमा थी।

निरंतर प्रयोग करने पर इनकी ऊर्जा समाप्त होने लगती थी। उसे पुनः प्राप्त करने के लिए रिफिल खरीदना पड़ता था।

अर्थात जिसके पास जितना अधिक धन था, उसके पास शक्तिशाली बने रहने के उतने ही अधिक अवसर थे।

लेकिन इन शक्तियों का निर्माण कैसे होता था?

इनका वास्तविक स्रोत क्या था?

इन प्रश्नों के उत्तर बहुत कम लोगों के पास थे।

एक साधारण परिवार

उसी शहर के एक साधारण से घर में एक वृद्ध व्यक्ति रसोई में नाश्ता बना रहा था।

उसने दीवार पर लगी घड़ी की ओर देखा और आवाज लगाई—

“आरव! उठ जाओ। कॉलेज नहीं जाना है क्या?”

कमरे के अंदर से आवाज आई—

“बस पाँच मिनट और, दादाजी।”

“तुम्हारे पाँच मिनट के कारण एक दिन संसार की सारी घड़ियाँ बंद हो जाएँगी।”

“तो कितना अच्छा होगा! कॉलेज के लिए कभी देर नहीं होगी।”

दादाजी हँसने लगे।

कुछ देर बाद आरव कमरे से बाहर आया। उसके बाल बिखरे हुए थे और आँखों में अभी भी नींद थी।

वह कुर्सी पर बैठ गया।

दादाजी ने उसके सामने नाश्ता रखते हुए कहा—

“पहले कुछ खा लो।”

आरव ने एक निवाला लिया और दादाजी की ओर देखकर पूछा—

“दादाजी, आप मेरे कॉलेज के समय पर ही नाश्ता क्यों करते हैं? पहले भी तो कर सकते हैं।”

“अकेले खाने से अच्छा है कि तुम्हारे साथ खा लूँ।”

आरव कुछ क्षण उन्हें देखता रहा।

फिर मुस्कुराते हुए बोला—

“मेरे बिना आपका क्या होगा?”

दादाजी के हाथ अचानक रुक गए।

उन्होंने आरव की ओर देखा और कहा—

“इसकी चिंता तुम्हें नहीं करनी चाहिए। तुम्हें अपने जीवन में बहुत आगे जाना है।”

“लेकिन आपके बिना नहीं।”

दादाजी मुस्कुराए, परंतु उनकी आँखों में एक विचित्र भाव था।

जैसे आरव की यह बात उन्हें किसी पुरानी घटना की याद दिला गई हो।

शक्ति और सम्मान

नाश्ता करते हुए आरव की दृष्टि सामने चल रहे समाचारों पर पड़ी।

एक धनवान व्यक्ति अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा था। उसके आसपास अनेक लोग खड़े होकर तालियाँ बजा रहे थे।

आरव ने पूछा—

“दादाजी, क्या शक्तिशाली होना इतना महत्वपूर्ण है?”

“क्यों पूछ रहे हो?”

“जिसके पास शक्ति है, सब उसका सम्मान करते हैं। जिसके पास नहीं है, उसे कोई पूछता भी नहीं।”

दादाजी ने शांत स्वर में कहा—

“जिसे तुम सम्मान समझ रहे हो, संभव है वह भय हो।”

आरव उनकी ओर देखने लगा।

दादाजी ने आगे कहा—

“शक्ति से तुम किसी को अपने सामने झुका सकते हो, लेकिन उसके हृदय में अपने लिए स्थान नहीं बना सकते।”

“तो शक्ति का क्या लाभ?”

“शक्ति का मूल्य इस बात से निर्धारित होता है कि उसका प्रयोग किसके लिए किया जाता है।”

आरव कुछ सोचने लगा।

दादाजी ने उसके कंधे पर हाथ रखा।

“और याद रखना, कुछ शक्तियाँ खरीदी नहीं जातीं। उनका वास्तविक मूल्य समझने में मनुष्य का पूरा जीवन निकल जाता है।”

आरव उस समय उनके शब्दों की गंभीरता नहीं समझ पाया।

उसने घड़ी देखी और अचानक कुर्सी से उठ गया।

“अरे! आज फिर देर हो गई।”

दादाजी हँसते हुए बोले—

“जाओ, नहीं तो आज तुम्हारे मित्र तुम्हारी सारी शक्तियाँ निकाल देंगे।”

मित्रों की दुनिया

कॉलेज के बाहर वीर और ईशा आरव की प्रतीक्षा कर रहे थे।

दूर से आरव को आते देखकर वीर ने कहा—

“देखो, आ गए हमारे महाराज!”

ईशा ने हँसते हुए कहा—

“एक दिन समय पर आकर हमें आश्चर्यचकित भी कर दिया करो।”

आरव ने उत्तर दिया—

“मित्रों को प्रतीक्षा करवाने में भी एक अलग आनंद है।”

“अच्छा? आज काव्या को भी यही समझा देना।”

काव्या का नाम सुनते ही आरव के चेहरे के भाव बदल गए।

“वह कहाँ है?”

वीर और ईशा एक-दूसरे को देखकर हँसने लगे।

तभी पीछे से आवाज आई—

“मेरी इतनी चिंता हो रही थी?”

आरव ने पीछे मुड़कर देखा।

काव्या उसके सामने खड़ी थी।

“नहीं, मैं तो बस पूछ रहा था।”

“अच्छा! तो मैं चली जाती हूँ।”

काव्या आगे बढ़ने लगी।

आरव ने तुरंत उसका हाथ पकड़ लिया।

“अरे, मेरी बात तो सुनो।”

वीर ने ईशा से कहा—

“चलो, हमारी यहाँ अब कोई आवश्यकता नहीं है।”

चारों हँसते हुए कॉलेज के अंदर चले गए।

इनकी मित्रता में धन का कोई महत्व नहीं था। एक-दूसरे के साथ बिताया गया समय ही इनके लिए सबसे मूल्यवान था।

कॉलेज की पढ़ाई, हँसी-मजाक और भविष्य के सपनों के बीच इनका जीवन प्रसन्नतापूर्वक चल रहा था।

आरव के लिए दादाजी उसका परिवार थे और ये मित्र उसकी दुनिया।

लेकिन वह नहीं जानता था कि आने वाले दिनों में उसकी यह सुंदर दुनिया एक कठिन परीक्षा से गुजरने वाली थी।

आरव का रहस्य

शाम हो चुकी थी।

कॉलेज से निकलने के बाद सभी मित्र अपने-अपने घरों की ओर चले गए।

आरव भी कुछ दूर तक पैदल चला।

फिर वह एक सुनसान स्थान पर रुक गया।

उसने आसपास देखा।

वहाँ कोई नहीं था।

उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने कमरे की कल्पना करने लगा।

उसके कमरे की दीवारें।

उसकी मेज।

उसका बिस्तर।

उसकी पुस्तकों की अलमारी।

अगले ही क्षण वह सड़क से गायब हो गया।

जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो वह अपने कमरे में खड़ा था।

उसके चेहरे पर प्रसन्नता छा गई।

“इस बार बिल्कुल सही स्थान पर पहुँच गया!”

उसने अपना बैग मेज पर रखा और बिस्तर पर बैठ गया।

आरव के पास एक ऐसी शक्ति थी, जिसे उसने कभी खरीदा नहीं था।

उसे स्वयं नहीं पता था कि यह शक्ति उसके पास कब और कैसे आई।

वह धीरे-धीरे इसका प्रयोग करना सीख रहा था।

कभी वह अपने इच्छित स्थान पर पहुँच जाता, तो कभी किसी अन्य स्थान पर।

इसलिए वह अपनी शक्ति का प्रयोग केवल तभी करता था, जब आसपास कोई न हो।

वह जानता था कि यदि संसार को उसकी इस शक्ति के विषय में पता चल गया, तो उसके जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती थीं।

विशेषकर तब, जब सामान्य मनुष्य के लिए ऐसी शक्तियाँ खरीदना भी संभव नहीं था।

दादाजी की मुस्कान

आरव अपने कमरे से बाहर निकला।

“दादाजी, मैं आ गया!”

दादाजी बैठक में बैठे पुस्तक पढ़ रहे थे।

उन्होंने आरव की ओर देखा।

“आज जल्दी आ गए?”

“हाँ, आज रास्ते में अधिक भीड़ नहीं थी।”

“अच्छा!”

दादाजी ने मुख्य द्वार की ओर देखा।

द्वार अभी भी अंदर से बंद था।

फिर उन्होंने आरव की ओर देखा और मंद-मंद मुस्कुराने लगे।

उन्होंने उससे कोई प्रश्न नहीं किया।

आरव को लगा कि उसने अपना रहस्य बहुत अच्छी तरह छिपा रखा है।

लेकिन क्या वास्तव में ऐसा था?

दादाजी ने बंद द्वार देखने के बाद भी उससे कुछ क्यों नहीं पूछा?

क्या उन्हें आरव की शक्ति के विषय में पहले से पता था?

और यदि पता था, तो वे इतने वर्षों से मौन क्यों थे?

आखिर उस साधारण से घर में कितने असाधारण रहस्य छिपे हुए थे?

अध्याय 2 समाप्त।